रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– के पी सिटी– 67/2018–20

अधिकार किसको जानने के लिए भारत सरकार की वेबसाइट www.dhr.gov.in लॉगिन कर क्लिक करें अल्टरनेटिव मेडिसिन तथा गज़ट पढ़ने हेतु log in करें www.behm.org.in

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही,
कानपुर–208014

वर्ष –41 ● अंक –23 ● कानपुर 1 से 15 दिसम्बर 2019 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य ₹100

आन्दोलन पारदर्शी होने चाहिये

आज सारे भारत वर्ष में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए विभिन्न तरह के आन्दोलन चलाये जा रहे हैं इन आन्दोलनों का परिणाम कितना अच्छा होगा यह तो हर आन्दोलन चलाने वाला ही जानता है, पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता की लड़ाई लड़ने वालों की एक लम्बी श्रंखला है और यह सारे के सारे लोग अपने–अपने ढंग से मान्यता की लड़ाई लड़ रहे हैं लेकिन निष्पक्षता से विचार किया जाये तो यह स्पष्ट दृष्टिगोचर हो जाता है कि इस लड़ाई को कौन वास्तविक रूप से लड़ रहा है ?सत्यता तो यह है कि अधिकांश आन्दोलन करने वाले हमारे नेतागण अपने व्यक्तिगत हितों को ऊपर रखकर यह लड़ाई लड़ रहे हैं, लड़ाई का स्वरूप स्पष्ट नहीं हो पा रहा है, जिसको जो समझ में आ रहा है उसी का प्रचार करना शुरू कर देता है।

हम भी मान्यता के पक्षधर हैं जैसा कि हम कई बार लिख चुके हैं परन्तु मान्यता जिस ढंग से लेनी चाहिये उसका एक प्रारूप है, मान्यता के लिये जो नीति बनायी जाये वह स्पष्ट और पारदर्शी हो और उस नीति पर यदि सर्वसम्मति न बन पाये तो अधिकाधिक लोगों का समर्थन प्राप्त हो, इसका लाभ यह होगा कि कोई भी इस नीति का विरोध नहीं कर पायेगा, अभी तक जितनी योजनायें बनी हैं उन्हें सफलता इस लिए नहीं मिली है क्योंकि आन्दोलन करता यह स्वयं तय करता है कि उसे आन्दोलन का क्या स्वरूप देना है ? जो आन्दोलन दीर्घ कालीन और जनहित से जुड़े होते हैं उन्हें सफलता अवश्य मिलती है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आन्दोलन अन्य आन्दोलनों से भिन्न है क्योंकि यह आन्दोलन सीधे–सीधे मानव जीवन से जुड़ा हुआ है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी पिछले डेढ़ शतक से इस देश में प्रचार व प्रसार कर रही है, किन्तु डेढ़ शताब्दी बीत जाने के बाद भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति में कोई क्रान्तिकारी परिवर्तन नहीं हुआ है जबकि इसकी समकालीन अन्य चिकित्सा पद्धतियां काफी आगे निकल चुकी हैं, यह एक चिन्तन का विषय है कि आखिर ऐसा क्यों है ? जब–जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता की बात आती है तो मान्यता देने वाले अधिकारी इस चिकित्सा पद्धति की तुलना अन्य प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों से करते हैं और जब तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है तो परिणाम यही आता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का अभी उतना विकास नहीं हुआ है जितना की किसी मान्यता पाने वाली चिकित्सा पद्धति के लिए होना चाहिये।

किसी भी अधिकारी का यह कहना बड़ा आसान होता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता का स्तर वह नहीं है जो होना चाहिये परन्तु सच्चाई यह है कि सन 1953 के बाद क्या सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के कार्यों का मूल्यांकन किया है इस चिकित्सा पद्धति से कितने असाध्य और मृत्यु के मुहाने में बैठे रोगियों को लाभ मिला है ?क्या कभी किसी ने यह जानने का प्रयास किया ! कि कैंसर जैसे गम्भीर और जटिल रोगों में इस चिकित्सा पद्धति की जो दावेदारी है उसकी वास्तविकता क्या है ? सत्य तो यह है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कार्य करने वाले का कभी भी समर्थन नहीं किया गया है, हास्य और उपेक्षा का दंश झेलते–झेलते हमारे चिकित्सक इलेक्ट्रो होम्योपैथी को यहाँ तक ला पाये हैं, विपरीत परिस्थितियों में काम करना और काम के परिणाम लेना इस बात के स्वतः प्रमाण होते हैं कि कार्य करने वाले की कुशलता पर कोई सन्देह नहीं किया जा सकता है।

यह तो हम सबके सामूहिक प्रयासों का ही परिणाम है कि 5–5–2010 और 21–6–2011 जैसे महत्वपूर्ण आदेश आज हमारे पास हैं और यह आदेश हर इलेक्ट्रो होम्योपैथ को कार्य करने का अवसर भी देते हैं परन्तु जो वैधानिक अधिकार हमें मिलना चाहिये जिसके लिये आज भी इलेक्ट्रो होम्योपैथ संघर्षरत हैं, और जो प्राप्त है इसे अक्षुण रखना हमारा परम दायित्व है।

मान्यता के लिए संघर्ष करना भी हमारा कर्तव्य है लेकिन वास्तव में इस संघर्ष को जो दिशा मिलनी चाहिये वह दिशा भ्रमित हो रही है बार–बार आश्वासनों के बाद जब हमारे आन्दोलनकारी सफलता नहीं पाते हैं तो साथियों में निराशा और अविश्वसनीयता का भाव पैदा होता है और लोगों का जुड़ाव भी धीरे–धीरे समाप्त होने लगता है, कुछ समय पूर्व एक संगठन ने देश व्यापी आन्दोलन चलाया, अनेक प्रदेशों का दौरा किया, जगह जगह मीटिंगें की, लोगों को भी जोड़ा, सदस्य भी बनाये एवं जनभावनायें उभारी और इसे ऐसा प्रस्तुत किया गया कि जैसे उनसे पहले किसी ने कोई आन्दोलन ही नहीं किया।

स्वरूप तो ऐसा बनाया गया कि सम्भवतः मान्यता मिल ही जायेगी, जिसके लिये एक निश्चित तिथि की भी घोषणा कर दी गयी और व्यापक रुप से यह प्रचार करने में कोई कमी नहीं की गयी कि अमुक तिथि तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता अवश्य मिल जायेगी, यदि सरकार ने घोषित तिथि तक मान्यता नहीं दी तो आर–पार की लड़ाई होगी, देखते ही देखते उक्त घोषित तिथि भी पार हो गयी, पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को कुछ नहीं मिला, मिला तो बस केवल आन्दोलनकारियों द्वारा दिया गया कोरा आश्वासन।

इस आन्दोलन को सफल बनाने के लिए तरह–तरह के उपक्रम किये गये, पुराने साथियों को गाली दी गयीं, जो पुराने आन्दोलनकारी थे उनकी जगकर आलोचना और भर्त्सना की गयी या दूसरे शब्दों में कहा जाये तो पुराने साथियों को इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता का बाधक और खलनायक तक बताया गया, इसी संगठन द्वारा पिछले दिनों सुपौल (बिहार) में राष्ट्रीय स्तर का एक सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें पुनः यह दोहराया गया कि देश में 25 लाख इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक कार्य कर रहे हैं (जबकि देश में संचालित बोर्ड/काउन्सिलों द्वारा भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा गठित अन्तर विभागीय समिति को चिकित्साकों की संख्या की पुष्टि नहीं की जा रही है)।

मनुष्य का स्वभाव होता है परनिन्दा सुनने में उसे बहुत आनन्द आता है, एक और धड़ा है जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के लिए राजनैतिक प्रयासों को मान्यता का सबसे बड़ा अस्त्र समझता है इसके लिए केन्द्रीय एवं विभागीय मंत्रियों से मिलना तथा मिलने का प्रयास करना, मिलकर अपनी बात कहना, यह बात तो अच्छी है लेकिन इसका जो प्रस्तुतीकरण है वह बहुत ही नाटकीय है, कुछ लोग किसी मंत्री के दफ्तर में जाते हैं, उनसे मिलते हैं और प्रचारित करने लगते हैं कि उन्होंने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता लिये अमुक मंत्री जी से चर्चा की है, सोशलमीडिया के माध्यम से पूरे देश को यह बताने का प्रयास किया जाता है कि मान्यता के लिए केवल वही प्रयास कर रहे हैं।

एक और संगठन है जो सदन में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता का बिल लाकर उस पर चर्चा कराना चाहता है और सदन में बिल पास करवाकर विधेयक बनवाते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता दिलवाने का प्रयास करने का दावा करता है, वह यह भी व्यापक रुप से प्रचारित करने में तनिक भी संकोच नहीं करता है कि उसी के ही प्रयासों से राजस्थान में विधेयक पारित हुआ था यह भी एक रास्ता है अपने आप को प्रचारित करने का, क्या इस रास्ते से भी मान्यता मिल सकती है ?लेकिन किसी भी बिल को प्रस्तुत करने के पहले उसके लाभ और हानि के बारे में अवश्य विचार कर लेना चाहिये, आपको बताते चलें कि सरकारी बिल और प्राईवेट बिल दोनों के पास होने में बड़ा अन्तर होता है, प्राईवेट बिल के सम्बन्ध में पहले तो सरकार यह परीक्षण करती है कि इस बिल को सदन में रखा जाये अथवा नहीं, यदि यह बिल किसी प्रकार सदन में आ भी जाता है तो चर्चा में कितने सांसद इस बिल का समर्थन करेंगे! लोकसभा के बाद राज्य सभा में इस बिल की गति क्या होगी ?और सबसे महत्वपूर्ण बात यह होती है कि यदि बिल गिर पास नहीं हो पाया तो स्थिति क्या होगी ?तर्क देने वाले तो यह कहते हैं कि बिल गिर जाने या पास हो जाने के भय से क्या इस क्षेत्र में काम न किया जाये।

ऐसा नहीं हो सकता प्रयास हर तरह से करना चाहिये लेकिन जो कदम उठाये जायें पहले उस पर गम्भीर विचार मंथन होना चाहिये उसके बाद ही कार्य होना चाहिये लेकिन आज स्थिति यह नहीं है व्यक्तिगत महत्वाकक्षांओं और प्रचार पाने के लोभ में तरह–तरह के हथकण्डे अपनाये जा रहे हैं, अपने सिद्धक साधकों के माध्यम से कुछ बातें ऐसी प्रचारित की जाती हैं जिनके दूरगामी परिणाम बहुत

शेष पेज 2 पर

- ✓ आन्दोलनों का स्वरुप पारदर्शी हो
- ✓ स्वःहित में नहीं जनहित में हों
- ✓ मान्यता कोई रोक नहीं सकता
- ✓ प्रयास होने चाहिये सकारात्मक
- ✓ अफ़वाहें अस्थिरता को जन्म देती हैं
- ✓ विवेक एवं संयम से लें काम

श्रद्धांजली को मिले अवसर

डाक्टर ब्रज बिहारी प्रसाद सिंह की अगुवाई में बिहार राज्य में इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा के क्षेत्र में झण्डा गाड़ने के साथ ही कुछ साथियों ने इससे इतर हट कर कुछ नया करने का संकल्प लिया इन संकल्पकर्ताओं में जो प्रमुख रहे उनमें स्मृति शेष डा0 रमा शंकर, स्मृति शेष डा0 सच्चिदानन्द झा तथा डा0 सुदामा प्रसाद सिंह को जाना जाता है।

डा0 ब्रज बिहारी प्रसाद सिंह के समूह में डा0 चन्डी दत्त मिश्रा प्रभाकर अर्थात डा0 सी0डी0 मिश्रा प्रभाकर, डा0 आर0 सी0 प्रसाद एवं डा0 उपेन्द्र प्रसाद सिंह अर्थात डा0 यू0 पी0 सिंह के नाम उल्लेखनीय हैं, डा0 ब्रज बिहारी प्रसाद सिंह के दायित्वों को डा0 यू0 पी0 सिंह आज भी निभा रहे हैं या यों कहिये कि उनके द्वारा संस्थापित एवं संचालित संस्थाओं को डा0 यू0 पी0 सिंह आज भी संचालित कर रहे हैं।

डा0 रमा शंकर, डा0 एस0 एन0 झा एवं डा0 एस0 पी0 सिंह द्वारा पटना के न्यु यारपुर में एक संस्था जो इलेक्ट्रो होम्योपैथिक रिसर्च सेन्टर एण्ड इन्सटीट्यूट के नाम से स्थापित की गयी जिसने अपना मुख्य लक्ष्य निर्धारित किया कि वह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में अनुसंधान पर कार्य करेगी जो इनके लिये सहज भी था, डा0 रमा शंकर जी आई0 सी0 आई0 कम्पनी से सम्बद्ध थे, जबकि डा0 एस0 एन0 झा रेलवे में, तथा डा0 एस0 पी0 सिंह राज्य की सेवा में थे, यह सभी आर्थिक रुप से समर्थ थे इसलिये इनके लिये यह कार्य सहज एवं सुगम था यह अपनी आय का कुछ अंश इलेक्ट्रो होम्योपैथी के अनुसंधान पर व्यय भी कर सकते थे और इन्होंने ऐसा किया भी, डा0 रमा शंकर जी अपनी कम्पनी से निवृत्त होने के पश्चात सांसारिक माया मोह को त्याग कर आध्यात्म के क्षेत्र में प्रवेश कर गये तथा उन्होंने प्रचलित वेश भूषा त्याग कर गेरुवे वस्त्रों को धारण कर लिया, मुझे भलि–भाँति स्मरण है कि मुरादाबाद इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल कालेज, मुरादाबाद द्वारा नैमिषारण्य में एक इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा शिविर लगाया गया जिसमें टहलते हुये डा0 रमा शंकर जी उपस्थित हुये और शिविर के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की, उन्हे जैसे ही यह जानकारी हुयी कि इस शिविर में हम आने वाले हैं तो उन्होंने शिविर संचालकों से निवेदन किया कि हमारे उपस्थित होने पर उन्हे आश्रम में सूचित करें और कुछ ऐसा ही हुआ भी, हम जैसे ही शिविर में पहुँचे तो देखते क्या हैं कि डा0 रमा शंकर जी गेरुवें वस्त्रों में हमसे मिलने के लिये आ गये, उन्हें और उनकी वेशभूषा देखकर एक पल तो हम चौंक ही गये सहजता आखों से देखे गये दृष्य पर विश्वास नहीं हो रहा था कि यह वही डा0 रमा शंकर जी हैं जिन्हें हम समान्य वेशभूषा में देखा करते थे, मेरे मन में उहापोह की स्थिति थी एक तूफान सा मन में हलचल कर रहा था अन्ततः जब हमसे नहीं रहा गया तो हमने अपनी मन की जिज्ञासा शान्त करने के लिये पूछ ही लिया कि "डा0 रमा शंकर जी ! यह क्या ?" उत्तर में उन्होंने कहा कि हम यहां शान्ति के लिये आये थे परन्तु यहां तो वहां से भी अधिक अशान्ति है! उनकी यह बात सुनकर उन्हें हमने कानपुर आमंत्रित कर दिया जिसे उन्होंने सहजता से सम्मान देते हुये अपने पुत्र जो कानपुर आई0 आई0 टी0 में रहा करते थे उनके पास आ गये और आई0 आई0 टी0 गेट के पास ही अपनी एक क्लीनिक खोल दी परन्तु उन्होंने अपने गेरुवें वस्त्रों को नहीं त्यागा और इन्हीं गेरुवें वस्त्रों के कारण लोग उन्हे **बाबा जी** कहा करते थे उनका चिकित्सा करने का अन्दाज़ लीक से बिल्कुल अलग था, उन्होंने यहां अनेकों शिष्य बनाये जिनमें डा0 अनिल श्रीवास्तव एवं मी डा0 अशोक शुक्ला आदि उल्लेखनीय हैं, डा0 रमा शंकर जी ने अपने साथियों का भी उल्लेख किया जो उनके साथ निःस्वार्थ भाव से लगे थे उनमें से एक नाम डा0 एस0 पी0 सिंह का है जो इन दिनों इलेक्ट्रो होम्योपैथी में पूरी तरह सक्रिय एवं समर्पित भी हैं, अपनी राज्य की सेवा से निवृत्त होने के पश्चात इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर किये गये अपने शोध परक कार्यों के उल्लेख के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी की संस्थाओं के साथ सामंजस्य स्थापित करना चाहते हैं, वह निरन्तर अन्तर विभागीय समिति के कार्यवाहियों पर दृष्टि रखे हुये हैं उनका कहना है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के फार्मूले के साथ मानक औषधि निर्माण के लिये उनके पास प्रयोगशाला भी है उन्हें अपनी दक्षता सिद्ध करने का अवसर मिलना चाहिये।

मान्यता हेतु अब बिहार भी बर्चस्य के प्रयास में

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के लिए मांग करते हुए एक बार फिर बिहार से पच्चीस लाख इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों के होने की याद दिलायी गयी है इसके लिए बाकायदा एक राष्ट्रीय अधिवेशन भी आयोजित किया गया है आयोजनकर्ताओं ने बिहार राज्य को ही कार्य के लिए चुना है यह विचारणीय विषय है क्योंकि देश के स्वास्थ्य राज्य मंत्री माननीय अश्विनी चौबे जी इसी राज्य से सांसद हैं और पिछले कुछ दिनों पहले उन्होंने नई दिल्ली के पॉश इलाके हौज़खास में एक कैन्सर पेन एण्ड प्रिवेन्टिव क्लीनिक का उद्घाटन भी किया था, इसका संचालन सिन्हा इलेक्ट्रो होम्योपैथिक अनुसंधान केन्द्र पटना द्वारा किया जाना है जो डा0 के0 पी0 सिन्हा के निर्देशन में संचालित है।

डा0 के0 पी0 सिन्हा एवं सिन्हा इलेक्ट्रो होम्योपैथिक अनुसंधान केन्द्र से सम्बद्ध समूह को यह पूर्ण विश्वास है कि माननीय श्री अश्विनी चौबे जी के सहयोग व समर्थन से इलेक्ट्रो होम्योपैथी को केन्द्र सरकार द्वारा मान्यता प्रदान हो सकती है इस प्रयोजन को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए ही बिहार राज्य में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की गतिविधियां तेज़ कर दी गयी हैं जिससे मंत्री जी के बिहार आने जाने पर उन्हें लक्ष्य की प्राप्ति तक स्मरण कराया जाता रहे तथा देश की राजधानी दिल्ली में भी अनेकों कार्यक्रमों की निरन्तरता बनाये रखने के लिए वर्ष 2019 एवं 2020 में सम्मेलनों, बैठकें एवं गोष्ठियों के आयोजन की एक श्रंखला सी तैयार की गयी, जिससे देश में केन्द्र सरकार सहित अन्य अभिकरणों यथा भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद आदि को इलेक्ट्रो होम्योपैथी में हो रहे कार्यों की अद्यतन जानकारी उपलब्ध होती रहे जिससे उनका सहयोग एवं सहानुभूति भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी को प्राप्त होती रहे।

भारत सरकार,स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा गठित अन्तरविभागीय समिति द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के लिए प्रस्तुत 31 मार्च, 30 जून, 30 सितम्बर एवं 31 दिसम्बर, 2017 तक प्रपोज़लों पर समीक्षा एवं उसके निष्कर्ष में की गयी कार्यवाही तथा उसके अनुपालन में भारत सरकार द्वारा जारी आदेशों का गहनता से परीक्षण एवं अनुशीलन कर अग्रिम कार्यवाही पर विचार के साथ साथ मान्यता के लक्ष्य को भेदने के लिए इस कार्य में बिहार राज्य ने अग्रणी की भूमिका में पकड़ बना ली है, ऐसे में ही एक अन्य ऐसी संस्था जो बिहार राज्य से ही है और अभी तक दृष्टिगत नहीं थी उसका दावा है कि उसके पास वह सबकुछ है जो भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा गठित अन्तरविभागीय समिति को वांछित है, उस संस्था को विश्वास है कि यदि उसे अवसर मिले तो निःसन्देह इलेक्ट्रो होम्योपैथी अधिनियमित हो जायेगी, इस संस्था ने इसके पूर्व अपना दावा 15 मई, 1983 को इण्डिया टुडे नामक अंग्रेजी पत्रिका को दिये गये अपने एक साक्षात्कार में भी किया था कि उसके पास वह सबकुछ है जिससे इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता मिल सकती है, यह विडम्बना रही कि दावेदार राज्य की सेवा में होने के कारण अपने दावे को मूर्तरूप नहीं दे सका किन्तु वह लक्ष्य की प्राप्ति के लिए लगातार प्रयासरत रहा, इस अवधि में केन्द्र सरकार द्वारा कई समितियों का गठन भी किया गया, उसके परिणाम भी आये, उसी कड़ी में भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा गठित अन्तर विभागीय समिति का गठन हुआ जो 28 फरवरी, 2017 से निरन्तर कार्य कर रही है और उसने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए अनेकों बैठकें भी की हैं जिनके परिणाम सकारात्मक हैं किन्तु अपरिहार्य करणों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता को पूर्णतः नहीं प्राप्त हो रही है जबकि भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा गठित अन्तरविभागीय समिति ने मान्यता हेतु वांछित मांगों को कम कर दिया है फिर भी प्रपोज़लकर्ता / संयुक्त संशोधित प्रपोज़लकर्ता वांछित की पूर्ति अब तक नहीं कर सके हैं।

इस स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए और बिहार राज्य से केन्द्र सरकार में स्वास्थ्य राज्यमंत्री की उपस्थिति का लाभ उठाते हुए बिहार राज्य की संस्थाओं ने पूरा मन बना लिया है कि वह बिहार राज्य के स्वास्थ्य राज्यमंत्री के प्रतिनिधित्व का लाभ उठाते हुए येन केन भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा गठित अन्तर विभागीय समिति द्वारा वांछित की पूर्ति करने का प्रयास करेंगे इस हेतु जहां सिन्हा इलेक्ट्रो होम्योपैथिक अनुसंधान केन्द्र ने कमर कस ली है वहीं पटना स्थित इलेक्ट्रो होम्योपैथिक रिसर्च सेन्टर एण्ड इन्सटीट्यूट ने भी अपने शोध परक साहित्यों एवं मानक औषधि निमार्ण विधि के साथ इस कार्य को अन्तिम रूप देने के लिए मन बना लिया है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक रिसर्च सेन्टर एण्ड इन्सटीट्यूट के मानद सचिव डा0 एस0 पी0 सिंह का कहना है कि देश के सभी संगठन जिन्होंने प्रपोज़ल / संशोधित संयुक्त प्रपोजल प्रस्तुत किया है उन्हें अब उनके संगठन को सहयोग करना चाहिये, जिससे भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा गठित अन्तर विभागीय समिति द्वारा वांछित की पूर्ति उनके द्वारा सहजता से पूर्ण की जा सकती है उनका यह भी कहना है कि उनके पास उन सभी बिन्दुओं से सम्बन्धित सूचनायें एवं अभिलेख उपलब्ध हैं जिन्हें इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के लिए प्रस्तुत किया जा सकता है, डा0 एस0 पी0 सिंह का यह भी कहना है कि भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा गठित अन्तर विभागीय समिति द्वारा वांछित की पूर्ति हेतु समस्त सामग्री उनके पास उपलब्ध है।

आन्दोलन पारदर्शी ..... प्रथम पेज से आगे

खतरनाक होते हैं।

बिल को लेकर जिस तरह का भ्रम फैलाया गया उसने अविश्वसनीयता को जन्म दिया है, लोग एक दूसरे को सन्देह की दृष्टि से देखते हैं! एक सज्जन ने तो इतने विश्वास से प्रचारित किया कि अमुक दिवस को इलेक्ट्रो होम्योपैथी का बिल सदन में चर्चा के लिये लाया जायेगा परन्तु यह सज्जन भूल गये कि उक्त घोषित दिवस निजी बिल के लिये चर्चा के लिये नहीं है इस लिये उक्त दिवस को इलेक्ट्रो होम्योपैथी का बिल कैसे सदन में आ सकता है!

इस तरह के दावे समाज में भ्रम के साथ–साथ अविश्वास को भी जन्म देते हैं कुछ लोगों ने यहां तक भ्रम फैलाया कि बिल पास हो गया है, और अब इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों को भी सरकारी नौकरियां मिलने लगेंगी, इस तरह के आन्दोलनों के झूठे प्रचार से लगातार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के अगुवाकारों की छवि धूमिल हो रही है, सहयोग करने वाले छिटक रहें हैं, विश्वसनियता की हालत यह है कि लोग एक दूसरे को कुछ भी कहने में संकोच नहीं करते हैं यदि इस प्रकार के आन्दोलनों पर लगाम नहीं लगाई गयी तो एक दिन ऐसे छद्म इलेक्ट्रो होम्योपैथी के तथाकथित सेवक सब कुछ खत्म कर देंगे।

डा0 सिन्हा के कार्य आज भी प्रासांगिक–डा0 इदरीसी

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को वस्तुतः यदि हम स्थापित करना चाहते हैं तो हमें कार्य करना होगा क्योंकि सफलता का मूलमंत्र कार्य में छिपा होता है।

मनुष्य का जन्म लेना और कालकवलित होना सामान्य प्रक्रिया है, जो आया है ! वह जायेगा ही !! उसके किये हुये कार्य सदैव याद किये जाते हैं और उनसे प्रेरित होकर भविष्य की नींव रखी जाती है, इतिहास बताता है कि कर्मों से ही व्यक्ति महान बनता है यह विचार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के महान चिकित्सक डा0 नन्दलाल सिन्हा की जयन्ती पर आयोजित कार्यक्रम में डा0 एम0 एच0 इदरीसी चेयरमैन, बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने व्यक्त किये, डा0 इदरीसी ने कहा कि जो व्यक्ति महान होते हैं उनकी महानता के पीछे उनके किये गये कार्य ही होते हैं और यदि वह कार्य जनहित में किये गये होते हैं तो सदियों तक उन्हें याद किया जाता है, ऐसा नहीं है कि स्व0 नन्दलाल सिन्हा के पहले इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कार्य नहीं हुआ था पहले भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में योग्य व महान चिकित्सकों ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए कार्य किये जिनमें से डा0 एस0 पी0 श्रीवास्तव, डा0 बल्देव प्रसाद सक्सेना, डा0 वी0 एम0 कुलकर्णी (सभी महान यशस्वी) के नाम प्रमुखतः से लिये जा सकते हैं।

डा0 नन्दलाल सिन्हा ने वह कार्य किये जिससे स्वतन्त्र भारत में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त हुआ, आज उनके कार्यों की प्रासंगिकता फिर बढ़ गयी है क्योंकि अब वह समय आ गया है जब अपने अस्तित्व की रक्षा करनी है तो कार्य के द्वारा समाज के बीच अपनी उपयोगिता सिद्ध करनी होगी।

डा0 सिन्हा ने अपनी एक अलग पहचान बनाई उन्होंने कैंसर जैसे असाध्य रोग पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की दावेदारी बतायी, साथ–साथ रोगियों को लाभ भी दिया कुष्ठ जैसे गम्भीर रोग पर भी डा0 सिन्हा ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपयोगिता सिद्ध की, अब हम सब चिकित्सकों को भी मिलकर उस पुरानी दावेदारी को सिद्ध करके दिखाना है, डा0 इदरीसी ने अतीत को स्मरण करते हुए बताया कि स्व0 सिन्हा के काम करने का ढंग अलग ही था वह बहुत विश्वासपूर्वक अपनी पैथी पर भरोसा करते थे, उन दिनों कैंसर के नाम से लोग काँपते थे, कैंसर जानलेवा बीमारी हुआ करती थी, आज की तरह उत्कृष्ट मशीनें नहीं थीं और न ही कीमोथेरेपी का जन्म हुआ था, कोबाल्ट और रेडियम की किरणों से रोगियों के रोगग्रस्त स्थान पर सिंकायी की जाती थी, बात सन् 1973–74 की है जब कानपुर जैसे शहर में डा0 सिन्हा की बड़ी–बड़ी होर्डिंगे लगा करती थीं जिनमें हाथ का

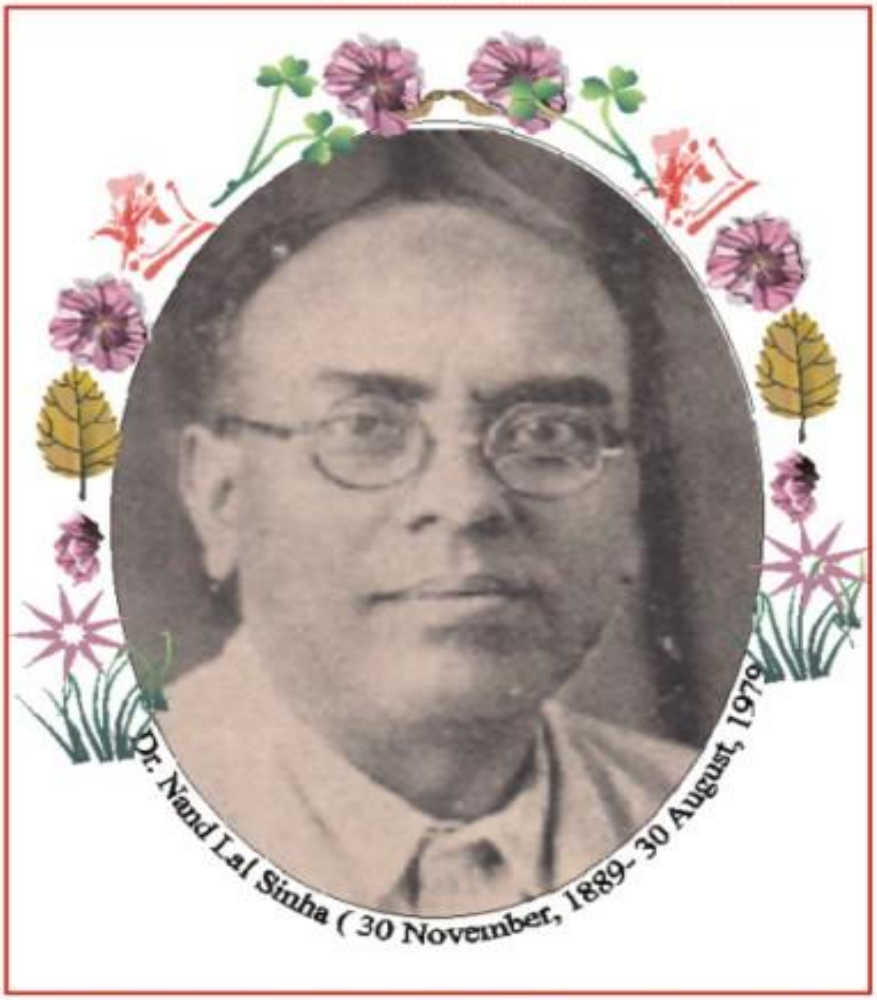

पंजा बना होता था बांई तरफ और दांई तरफ लिखा होता था ठहरिए ! कोबाल्ट और रेडियम रेज़ लगवाने से पहले कैंसर रोगी मिलें !! यह यहाँ पर लिखने का मतलब यह है कि डा0 सिन्हा मान्यता से ज़्यादा काम करने पर ध्यान देते थे उनका मानना था कि काम बोलता है।

हम काम के दम पर मान्यता पायेंगे !
मान्यता मांग कर नहीं मिलती, कार्य के परिणामों से मिलती है !!

इसका जीता जागता उदाहरण उन्होंने प्रस्तुत किया, सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपयोगिता जाँच के लिए दिये गये कुष्ठ रोगियों के ऊपर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियों का प्रयोग कर उन्हें आराम दिलाया और सरकार को विवश किया कि सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपयोगिता को स्वीकारे, इसी का परिणाम था कि 27 मार्च, 1953 का वह अर्धशासकीय पत्र जो प्रदेश सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए जारी किया था, यह पत्र सिद्ध करता है कि कार्य की महत्ता श्रेष्ठ है, दुर्भाग्य से आज कार्य के स्थान पर माँगों पर ज़्यादा ज़ोर दिया जा रहा है, मान्यता एक ऐसा मुद्दा बना दिया गया है और ऐसा वातावरण तैयार कर दिया गया है कि जैसे बिना मान्यता के कार्य ही नहीं किया जा सकता है, जबकि सत्य यह है कि पहले की तुलना में आज कार्य करने में ज़्यादा आसानी है, औषधियों की उपलब्धता भी बढ़ी है माँग और पूर्ति का अनुपात लगभग बराबर है, फिर भी कार्य के प्रति लोगों की रूचि नहीं है तो आइये आज के दिन हम सब चिकित्सक यह संकल्प लें कि इतना कार्य करेंगे जिससे सरकार हमें मान्यता अवश्य प्रदान करेगी, आपको बता दें कि डा0 नन्दलाल सिन्हा का जन्म 30 नवम्बर, 1889 को हुआ था और पूरा देश 30 नवम्बर का दिन सिन्हा जयन्ती के रूप में मनाता है।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के रजिस्ट्रार डा0 अतीक अहमद ने कहा कि डा0 इदरीसी ने जो वास्तविक दृश्य अपने वक्तव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया हैं निसन्देह उस पर चलकर ही सफलता अर्जित की जा सकती है, भावनाओं के लिए स्थान तो है लेकिन कर्तव्यों पर भावनायें हावी नहीं होनी चाहिये, हर व्यक्ति को अपनी योग्यता का मान होता है, हर चिकित्सक को अपनी क्षमतानुसार चिकित्सा करनी चाहिये यदि कार्य में कोई कठिनायी आये तो अपने से वरिष्ठ चिकित्सक से पूछने में कोई परहेज़ नहीं करना चाहिये, एक दूसरे से पूछने में ज्ञानवृद्धि ही होती है, कोई छोटा बड़ा नहीं होता है, हमें किसी अन्य चिकित्सा पद्धति से स्वयं की तुलना नहीं करनी चाहिये, हम जिस पद्धति के हैं उसी पर गर्व करते हैं और गर्व से कार्य करना चाहिये, आज कार्य को प्रमुखतः दें कल अच्छे परिणाम आपको प्रतिफल देंगे।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के संयुक्त सचिव डा0 मिथलेश कुमार मिश्रा ने कहा कि परिस्थितियां लाख बदल जायें परन्तु कार्य की गति नहीं बदलनी चाहिये क्योंकि परिस्थितियां समय के वशीभूत होती हैं लेकिन कार्य मनुष्य के अधीन होता है इलेक्ट्रो होम्योपैथी का यह एक दुःखद पहलू है कि यहां पर कामनायें तो हर एक व्यक्ति करता है लेकिन कामना की पूर्ति के लिए जो आवश्यक कार्य हैं उनसे विरत रहता है, हमें कार्य संस्कृति को पुनर्जीवित करना होगा, ऐसे संस्कारों को जन्म देना है जो कार्य को प्रमुखता दें, सिन्हा जयन्ती की सार्थकता मात्र फूल माला चढ़ाकर रस्म अदायेगी से नहीं होनी चाहिये अपितु कार्य करके होनी चाहिये, मान्यता के भूत से ऊपर उठकर कार्य करते हुए मान्यता लेने का प्रयास होना चाहिये जिन लोगों ने आज कार्य करने का संकल्प लिया है वह अपने संकल्प को पूरा करके दिखायेंगे, प्रायः देखा गया है कि संकल्प तो लोग ले लेते हैं परन्तु उसपर अमल नहीं करते हैं।

कार्यक्रम का समापन करते हुये संयोजक डा0 मिथलेश कुमार मिश्रा संयुक्त सचिव इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया ने कहा कि हमारे सभी पूर्व वक्ताओं ने कार्य की महत्ता पर विस्तार से चर्चा की है, हमारे चिकित्सक बहुत सीधे हैं, उन्हें यह बताना चाहिये कि कार्य कैसे किया जाता है ?मेरा सुझाव है कि हर चिकित्सक को चाहिये कि वह अपने पंजीकरण को ठीक करा ले और अपने क्लीनिक के बाहर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक का स्पष्ट बोर्ड लगाये, इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियों का ही प्रयोग करे और इन्हीं औषधियों से रोगी की चिकित्सा करे, एक बात और है प्रदेश में वैधानिक रूप से चिकित्सा करने के लिए सी0 एम0 ओ0 कार्यालय में पंजीयन हेतु आवेदन अवश्य प्रेषित कर दे जब तक सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए अलग से कोई व्यवस्था नहीं की जाती है तब तक सी0 एम0 ओ0 ही हमारा अधिकारी है, वैसे बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0 इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थाई व्यवस्था के लिए प्रयास रत है, शीघ्र ही परिणाम आयेंगे, भ्रमित होने की आवश्यकता नहीं है।

जो लोग मान्यता की बात करें आप उनसे यह कह सकते हैं कि आप भी काम करें और हमें भी करने दें फिर हम दोनों मिलकर मान्यता की लड़ाई लड़ेंगे, मान्यता तो मिलनी ही है आज नहीं तो कल, परन्तु यदि आज काम नहीं किया तो कल का इंतज़ार व्यर्थ है, आज के दिन की सार्थकता कार्य से है इसलिए प्राथमिकता के आधार कार्य को स्थान दें कार्यक्रम को अन्य व्यक्ताओं ने भी सम्बोधित किया।

कार्यक्रम का संचालन डा0 मारिया इदरीसी ने किया, श्री मो0 वसीम, नसीम इदरीसी शाहिना इदरीसी,स्वालेहा एवं डा0 वाई0 आई0 खान प्रमुख रुप से कार्यक्रम में उपस्थित थे।

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0

8–लालबाग, कमला शर्मा मार्ग, लखनऊ–226001

प्रशा0 कार्या0 : 127/204 "एस" जूही,कानपुर–208014

email: registrarbehmup@gmail.com

F.M.E.H. व A.C.E.H. पाठयक्रमों के संचालन हेतु निम्न जनपदों में स्टडी सेन्टर्स के स्थापनार्थ इच्छुक व्यक्तियों/संस्थाओं से आवेदन आमंत्रित करता है

इलाहाबाद, कौशाम्बी, बाँदा, चित्रकूट, झाँसी, ललितपुर, आगरा, मथुरा, मैनपुरी, एटा, कासगंज, हाथरस, मेरठ, बागपत, बुलन्दशहर, सहारनपुर, मुजफ़्फ़र नगर, शामली, रामपुर, बिजनौर, अमरोहा, सम्भल, बरेली, बदायूँ, मुरादाबाद, पीलीभीत, हरदोई, सीतापुर, फ़ैज़ाबाद, सुलतानपुर, श्रावस्ती, बस्ती, गोरखपुर, खलीलाबाद,ग़ाज़ीपुर, बलिया, वाराणासी, चन्दौली, भदोई, औरैया,फर्रुखाबाद एवं कन्नौज।

आवेदन पत्र एवं निर्देश बोर्ड की वेबसाइट www.behm.org.in (link Affiliation) से डाउनलोड कर सकते हैं।

Offered Courses

Name of the Course	Abbreviation	Eligibility	Duration
Member of Board of Electro Homoeopathic	M.B.E.H.	10+2 (Bio Group) or Equivalent	Three Years
Fellow of Medicine in Electro Homoeopathy	F.M.E.H.	10+2 (Any Stream) or Equivalent	Two Years (4 Semester)
Advance Certificate in Electro Homoeopathy	A.C.E.H.	RegisteredPractitioner Any Branchor Equivalent	1 Semester
Graduate in Electro Homoeopathic System	G.E.H.S.	10+2 (Bio Group) or Equivalent	4 Years Plus(1 Year Internship)
Post Graduate in Electro Homoeopathy	P.G.E.H.	Graduate in any Medical Stream or Equivalent	2 Years